RNI NO. : MPHIN33094

अक्टूबर से दिसंबर 2024

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

# चहकती चेतना

वर्ष : 17 वां

अंक : 66 वां

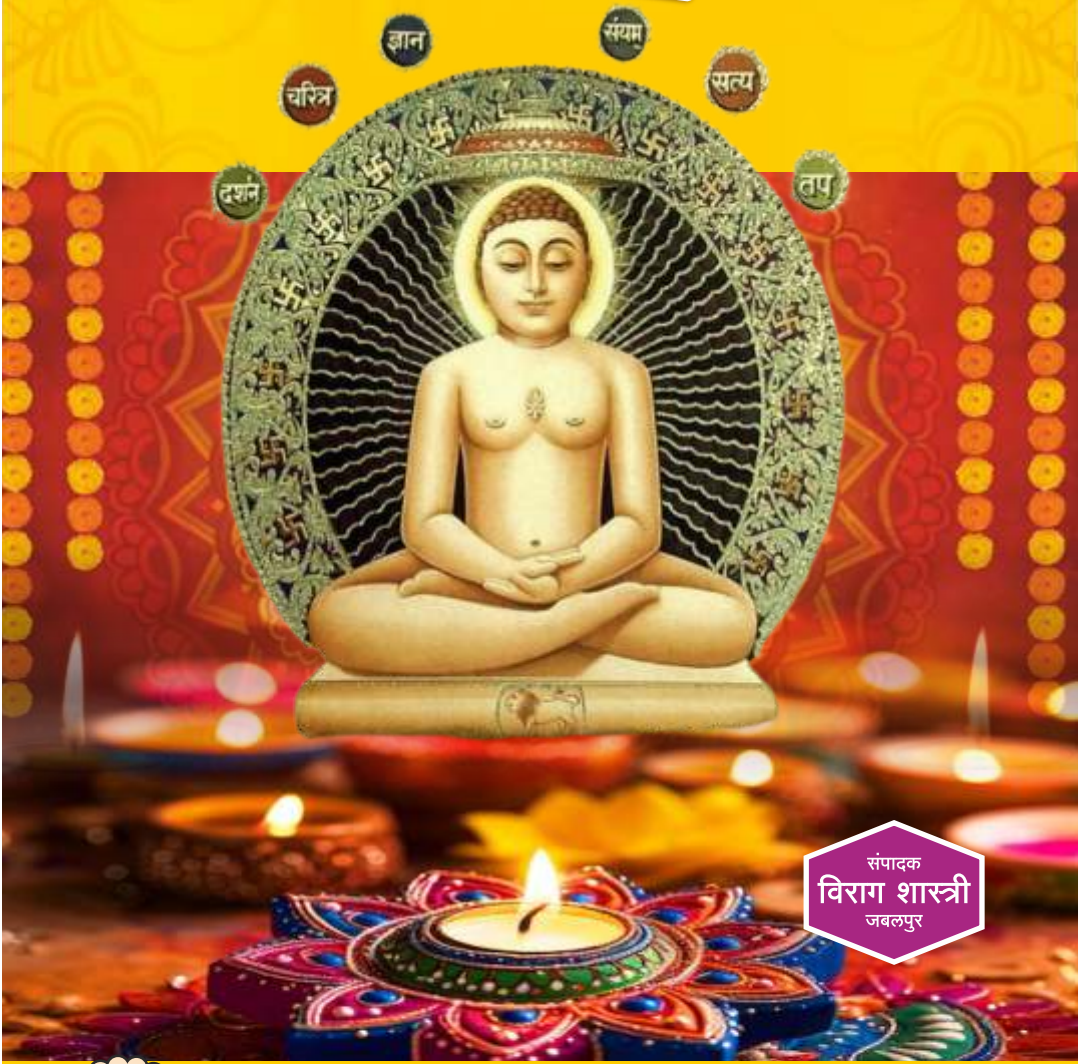


संपादक
विराग शास्त्री
जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

## भोपाल जिनदेशना यूथ कन्वेंशन

## पौन्नूर आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

# चहकती चेतना

जुलाई से सितंबर 2024

**प्रकाशक**
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

**संस्थापक**
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

**संपादक**
विराग शास्त्री, जबलपुर

**प्रबंध संपादक**
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

**परमशिरोमणि संरक्षक**
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
डॉ. उज्ज्वला शहा–पंडित दिनेश शहा, मुम्बई
श्री अजित प्रसाद जी जैन दिल्ली, श्री विवेक जैन बहरीन

**परमसंरक्षक**
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज (उ.प्र.)
श्रीमती कोमल नीरज जैन, नीरु केमिकल्स, दिल्ली

**संरक्षक**
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.

**मुद्रण व्यवस्था**
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

**प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय**
''चहकती चेतना''
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684


| क. | विषय | पेज |
|---|---|---|
| 1 | सूची | 1 |
| 2 | फास्ट फूड कल्चर.... | 2 |
| 3 | संपादकीय | 3 |
| 4 | कविता - दीवाली आई/पापाजी | 4 |
| 5 | विदेशों में दिगम्बर मुनियों का विहार | 5 |
| 6 | अभिवादन / कर्त्तव्य | 6 |
| 7 | निर्लोभी विद्वान / अपना घर | 7 |
| 8 | निस्पृहता / सहयोग आमंत्रित | 8 |
| 9 | शब्दों का अपमान/न्यूज पेपर.../एक... | 9 |
| 10 | दांत और जीभ ..... | 10-11 |
| 11 | रावण को राक्षस/कड़वा सच | 12 |
| 12 | दानवीर भामाशाह | 13 |
| 13 | परिणामों का फल | 14 |
| 14 | पटाखा पोस्टर | 15-16 |
| 15 | जाप की माला | 17 |
| 16 | समवशरण / जिनदेशना अहिंसा अभियान.. | 18-19 |
| 17 | सोशल मीडिया..... | 20-21 |
| 18 | अमर शहीद अमरचंद... | 22-23 |
| 19 | उपसर्ग की आराधना | 24 |
| 20 | प्रेरक प्रसंग - गर्व किस पर / विशाल हृदय | 25 |
| 21 | जैन शब्द की प्राचीनता | 26 |
| 22 | शंका समाधान | 27 |
| 23 | समाचार | 28 |
| 24 | जन्मदिन | 29 |
| 25 | भुलाये नहीं भूलती | 30-31 |
| 26 | कर्म प्रधान करि राखा.... | 32 |


**सदस्यता शुल्क - 500/- रु. (तीन वर्ष हेतु)**
**1500/- रु. (दस वर्ष हेतु )**

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

**www.vitragvani.com**

डिजाइन/ ग्राफिक्स गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

# फास्ट फूड कल्चर और जानलेवा बीमारियाँ

आजकल फास्ट फूड आधुनिकता का पर्याय बन गये हैं। इसी कारण से आज युवाओं को भी कब्ज, अल्सर, हृदय रोग, ब्लड प्रेशर, आंखों के रोग, बहरापन, डायबिटीज जैसी प्राणघातक बीमारियाँ हो रहीं हैं। विदेशी संस्कृति से प्रभावित होकर फास्ट फूड का सेवन करने वाले लोग अनजाने में ही रोगों को आमंत्रित कर रहे हैं। फास्ट फूड खाते समय बहुत स्वादिष्ट लगते हैं परन्तु धीरे-धीरे शरीर के अंगों पर घातक प्रभाव जमाते हैं। जितनी तेजी से फास्ट फूड का लोकप्रिय हो रहा है उतनी ही तेजी से रोगियों की संख्या बढ़ रही है।

**फास्ट फूड हमारे स्वास्थ्य के दुश्मन हैं -** आमतौर पर डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ बहुत समय से पैक रखे होते हैं और हानिकारक होते हैं। बिस्कुट, पेस्ट्री, पिज्जा, बर्गर, नमकीन, मिठाईयाँ इत्यादि को लम्बे समय तक सुरक्षित करने के लिये केमिकल्स का प्रयोग किया जाता है जो शरीर को नुकसान पहुँचाते हैं।

## स्वाद के नाम पर जहर -

आजकल फैशन और आधुनिकता के नाम पर डिब्बाबन्द चटपटे, स्वादिष्ट मिठाईयों का प्रयोग किया जा रहा है। नूडल्स में मिलाये जाना वाला रंग स्वाद कोशिकाओं को भ्रमित करती है इसके कारण लम्बे समय तक मैगी नूडल्स आदि खाने से स्वाद लेने की प्राकृतिक शक्ति समाप्त होने लगती है। बासे पदार्थों को ताजा रखने वाला केमिकल अजीनामोटो आसानी से बाजार में उपलब्ध है। ये पशुओं की चर्बी से बनने के कारण मांसाहार है। भोजन में स्वाद बढ़ाने वाले सेक्रीन, साइक्लोमेट, एमेसल्फ जैसे केमिकल्स कैंसर के कारण बन सकते हैं। इसलिये आप अपने लम्बे और स्वस्थ जीवन के लिये घर का बना ताजा भोजन करें जिससे आप पाप से बचेंगे और स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा।

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका
चहकती चेतना

# संतुष्ट भी रहें और सावधान भी ...

वर्तमान समय में चारों और सैकड़ों घटनाएं घटित हो रही हैं। हर दिन होने वाले कई एक्सीडेंट में हजारों लोग मर रहे हैं, कहीं कोई बच्चे पढ़ाई में टेंशन अथवा अच्छे नंबर नहीं आने से आत्महत्या कर रहे हैं तो कहीं नौकरी की टेंशन और नौकरी मिल गई तो बड़ी पोजीशन पाने की चिंता, कहीं पारिवारिक झगड़े, हर जगह समस्याओं का अंबार और अब नए तरीके से लोगों को लूटने का तरीका जिसे क्राइम की भाषा में डिजिटल अरेस्ट कहा जाता है। इसके अंतर्गत किसी भी व्यक्ति को फोन करके झूठे केस में फंसाने, झूठी कहानी और पुलिस गिरफ्तारी का डर दिखाया जाता है और धमकी देकर मिनटों में ही लाखों रुपए अपने अकाउंट में ट्रांसफर कराकर गायब हो जाते हैं। पुलिस भी कुछ नहीं कर पाती और आज के बच्चों पर दूसरे बच्चों से आगे निकलने का परिवार का प्रेशर। न जाने यह होड़ कहां तक लेकर जाएगी? जरूरत है आज के बच्चों को संतोष वृत्ति धारण करने की और हर समय सावधान रहने की यह हमने हजारों बार सुना है कि संयोग पुण्य प्रमाण ही मिलते हैं। जगत में मिलने वाली अनुकूलता अपने पूर्व कर्मों के उदय से ही मिलती है तो फिर बच्चों पर पढ़ाई का अथवा बढ़िया नौकरी का प्रेशर बढ़ाने का क्या तात्पर्य है ? यह साधारण सा मनोविज्ञान है कि यदि बच्चों को बार-बार प्रेशर किया जाएगा तो भी घर पर बात करना ही बंद कर देते हैं और अपनी बात किसी से ना कह पाने के कारण मन ही मन कुंठित होते रहते हैं।

परिवार में इतना स्वस्थ माहौल होना चाहिए कि बच्चे भी निःसंकोच मित्र की भांति अपनी समस्याएं और सफलताएं परिवार से साझा कर सकें। यदि परिवार का माहौल इस तरह का होगा और बच्चे को ये विश्वास होगा मेरे हर सुख और दुख में सफलता असफलता में मेरा परिवार मेरे साथ है और निःसंदेह उनके जीवन जीने का अंदाज ही बदल जाएगा। प्रतिस्पर्धा नहीं बल्कि प्रेरणा दीजिए और और दूसरी तरफ हर समय सावधानी की बहुत आवश्यकता है पल भर की चूक पूरे जीवन पर बहुत भारी पड़ती है इसलिए जिसके जीवन में संतुष्टि और सावधानी है उनका जीवन निराकुल और प्रसन्न रहेगा

–विराग शास्त्री

# दिवाली आई

रचनाकार–
डॉ.अखिल बंसल
जयपुर

देखो है दीवाली आई !
हर घर में हो रही सफाई,
बच्चों ने है ज्योति जलाई
प्रभु निर्वाण की बेला आई ।
देखो है दीवाली आई !

महावीर निर्वाण दिवस है,
गौतम गणधर ज्ञान दिवस है ।
रामचंद्र का राज्य दिवस है,
सबको यह दर्शाने आई ।।
देखो है दीवाली आई !

दीप संजोकर खुशी मनाओ,
मिलजुलकर रहना सिखलाओ ।
सत्य, अहिंसा, पाठ पढ़ाने
कैसी ज्योति निराली छाई ।।
देखो है दीवाली आई !

विश्व शांति की याद दिलाने,
जग में भातृ भाव फैलाने
अखिल पुनीत संदेशा लेकर,
नई प्रेरणा देने आई ।।
देखो है दीवाली आई !

# पापाजी

पापाजी तुम जल्दी आना
मुझको मंदिर जी ले जाना
वहाँ करुँगा भगवन भक्ति
भेद ज्ञान से मिलेगी शक्ति ।
पंच–परमेष्ठी ध्यान धरुँगा
निज स्वरुप पहिचान करुँगा
पठन करुँगा मनन करुँगा
सारे जग में नाम करुँगा ।
सिद्धालय है ध्येय हमारा
जहां नहीं है कोई तुम्हारा
भव–भव भ्रमण मिटाना है
अखिल मुक्ति पद पाना है ।

# विदेशों में दिगम्बर मुनियों का विहार

जैन और अन्य धर्म के पुराण ग्रन्थों से स्पष्ट होता है कि तीर्थंकरों और मुनिराजों का सम्पूर्ण आर्यखण्ड में विहार होता रहा है। अमेरिका,यूरोप, एशिया आदि के देशों में दिगम्बर मुनियों का विहार होता था। विश्व प्रसिद्ध लेखकों के कथनों से स्पष्ट है कि मुनि महावीर उस समय के आकनीय, वृकार्थप, वाल्हीक, यवरश्रुति, गांधार, ताण और कार्ण देशों में भी धर्म प्रचार करते हुये गये थे।

सम्राट सिकन्दर के साथ दिगम्बर मुनि कल्याण भारत से यूनान गये थे। यूनानी लेखकों के अनुसार कल्याण मुनि बैक्ट्रिया और इथ्यूपिया गये थे। डायोजिनेस और पैर्रहो में यूनानी कलाकारों ने दिगम्बर प्रतिमायें बनाईं थीं। वे यूनान जाते समय मुनिराज अफगानिस्तान और ईरान भी गये। मुनिराजों के प्रभाव से इस्लाम धर्म की स्थापना के समय हजारों जैनी अरब छोड़कर दक्षिण भारत आ गये । मौर्य सम्राट सम्प्रति ने मुनिराजों के इन देशों में विहार में सहायता की थी।ह्वेनसांग के अनुसार ईस्वीं की सातवीं शताब्दी तक दिगम्बर मुनिराज अफगानिस्तान में जैन धर्म का प्रचार करते रहे। मुनिराजों के प्रभाव का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि इस्लाम धर्म के सिद्धान्तों पर जैनधर्म का गहरा प्रभाव है।

अरब के बगदाद प्रसिद्ध कवि अबु-ल-अला की रचनाओं में जैनत्व की झलक मिलती है। ये कवि शाकाहारी थे, दूध और शहद का सेवन नहीं करते थे, अहिंसा धर्म मानने के कारण चमड़े के सामान प्रयोग नहीं करते थे। इन्होंने जैन मुनिराजों के साथ रहकर उनकी चर्या को विशेष रूप से देखा था।

अफ्रीका और अबीसीनिया देशों में भी दिगम्बर मुनियों का विहार हुआ था क्योंकि वहाँ की संस्कृति में दिगम्बरत्व का विशेष आदर देखा जाता है। मिश्र में नग्न प्रतिमायें मिलीं हैं। लंका में ईसा मसीह से 400 वर्ष पूर्व सिंहलनरेश पाण्डुकाभय ने राजनगर अनुरुद्धपुर में जैन मंदिर और जैन मठ बनवाया था। यहाँ जैन साधु निरन्तर आते थे। यहाँ के 21 राजाओं के बाद में अर्थात् 438 वर्ष बाद राजा वट्ट गामिनी ने जैन मंदिर और मठ को नष्ट कराके यहाँ बौद्ध विहार बनवाया था। मुनि यशःकीर्ति इतने प्रभावशाली थे कि नगर के राजा भी उनके चरणों की पूजा करते थे।

इस अनेक प्रमाणों से सिद्ध होता है कि दिगम्बर जैन मुनिराजों का विहार विदेशों में भी होता था।

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका
चहकती चेतना

# अभिवादन
## के प्राकृत शब्द

डॉ. अनेकांत शास्त्री (दिल्ली)

**प्राकृत हमारी सर्वाधिक प्राचीन भाषा है । हमारे प्राचीन ग्रन्थों की भाषा प्राकृत है । इस दृष्टि से यह हमारी साहित्यिक विरासत है । संभव हो तो अभिवादन में इन प्राकृत भाषा के शब्दों का प्रयोग करें –**

जब हम आपस में मिलते हैं तो यह कहें - **पणमामि/णमो जिणाणं/ जयदु जिणंदो**

जिनमंदिर में प्रवेश करते समय यह कहें - **णिस्सहि-णिस्सहि-णिस्सहि**

पंचपरमेष्ठी का वंदना के समय यह कहें - **णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं**
**णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं**

जिनवाणी को नमस्कार करते समय यह कहें - **जयदु सुद देवता**

दिगम्बर साधुओं की वंदना में यह कहें - **णमोत्थु, णमोत्थु, णमोत्थु**
आर्यिका-ऐलक-क्षुल्लक को कहें **वंदामि/ इच्छामि**

मुनिराजों की आहार चर्या के समय यह कहें - **हे सामि, णमोत्थु, णमोत्थु, णमोत्थु**
**अत्तो-अत्तो- तिट्ठो-तिट्ठो**
**मण सुद्धो वचन सुद्धो-काय सुद्धो**
**आहार-जल-सुद्धो अत्थि, भोयण**
**सालाए पवेशं करेन्तु**

# कर्तव्य

वर्णीजी अध्यापकों के साथ घूमने जा रहे थे तभी एक सड़क किनारे एक महिला को रोते हुये देखा। वहाँ जाकर देखा कि उस महिला के पैर में कांटा लग गया था। वह महिला उसे बार-बार निकालने का प्रयास कर रही थी पर उससे वह कांटा नहीं निकल रहा था जिसके दर्द के कारण वह बहुत रो रही थी। वर्णी जी ने देखा कि उसके पैर में खजूर के पेड़ का बड़ा कांटा था। जो आसानी से नहीं निकल सकता था। वर्णी ने उससे कहा कि यह कांटा निकाल देता हूँ। तब महिला बोली - आप पण्डित हैं और मैं छोटी जाति की महिला हूँ, मैं नहीं चाहती कि आप मुझे छुयें इससे आपको धर्म भ्रष्ट हो जायेगा। उन्होंने उस महिला को समझाया और वह कांटा निकाल दिया।
ऐसे थे वर्णीजी...।

# निर्लोभी विद्वान और उदार श्रेष्ठी

कविवर पण्डित भागचन्द बहुत प्रसिद्ध कवि थे और उनके द्वारा रचित भजन-भक्ति सभी जिनमंदिरों में लोकप्रिय थीं। पर वे बहुत गरीब थे। धन कमाने के लिये उन्होंने अपना गांव छोड़ दिया और दूसरे नगर पहुँच गये। रास्ते के एक जिनमंदिर में पूजन-विधान चल रहा था तो वे वहीं बैठ गये और अत्यंत भक्तिभाव से जिनेन्द्र पूजन किया और स्वाध्याय के बाद स्वयं के द्वारा रचित जिनवाणी स्तुति गाई। वह पद और सुन्दर स्वर सुनकर लोग वाह-वाह करने लगे। तभी एक श्रोता ने पण्डितजी से कहा - यह पद तो पण्डित भागचन्दजी का है। आप उन्हें कैसे जानते हैं ? तब पण्डितजी ने कहा कि 'मैं ही पण्डित भागचन्द हूँ।'

यह सुनकर और उनके पुराने से कपड़े देखकर सभी को बड़ा दुःख हुआ और उनसे आग्रह किया कि आप हमारे नगर में ही रुक जाइये और हम सबको जिनवाणी सुनाईये आपकी सारी जिम्मेदारी हमारी होगी। तो पण्डितजी बोले - भाई! धन के लिये प्रवचन करना मुझे शोभा नहीं देता। तब लोगों ने आग्रह करके धन उधार देकर उनकी एक दुकान खुलवा दी। कुछ माह बाद जब पण्डितजी की दुकान का सारा काम व्यवस्थित हो गया तो उन्होंने उन साधर्मी का धन वापस करना चाहा तो वे साधर्मी बोले पण्डितजी! यह दुकान तो आपकी ही है, ये देखिये इस दुकान के सारे पेपर आपके नाम पर ही हैं। जब पण्डितजी ने इसे लेने से मना किया तो वे साधर्मी बोले कि पण्डितजी! सर्वज्ञ भगवान की वाणी को सुनाने वाले हमें आप जैसे महाविद्वान मिले, यह हमारा सौभाग्य है तो हमारा भी कर्तव्य है कि हम आपको थोड़ा सा सहयोग करें। हमारी विनय स्वीकार कीजिये।

धन्य हैं ऐसे निर्लोभी विद्वान और उदार श्रेष्ठी।

# अपना घर

जैन कवि पंडित भूधरदासजी एक बार सामायिक कर रहे थे, उसी समय एक चूहा उनके पैर के फोड़े को काटता रहा जिसके कारण फोड़े में से खून निकलने लगा । सामायिक के बाद जब उनके घर के सदस्यों ने देखा तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ । अब उस फोड़े पर बार-बार मक्खी बैठ रही थी तो पंडित उस मक्खी को बार-बार उड़ा रहे थे । यह देखकर उनके भाई ने कहा - जब चूहे ने लगातार एक घंटे तक काटकर फोड़े में खून निकाल दिया तब आपने उसे भगाया नहीं, अब छोटी सी मक्खी को बार-बार उड़ा रहे हैं । तब पंडितजी ने उत्तर दिया - उस समय मैं अकेले अपने घर (ध्यान) में था, वहाँ किसी की चिंता नहीं रहती । यहाँ अब शरीर के साथ हूँ, इसलिये उसकी चिंता रहती है ।

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका
चहकती चेतना

## हमारे आदर्श

# निस्पृहता

हिन्दी साहित्य की प्रथम आत्मकथा अर्द्धकथानक के लेखक और नाटक समयसार के रचनाकार पण्डित कविवर बनारसीदासजी रात्रि में सो रहे थे। घर में काली मिर्च से भरी हुई बोरी रखीं थीं । रात में चार चोर भाई आये और एक दूसरे के सहयोग से बोरियाँ उठवाईं और तीन चोर बोरियाँ ले गये। चौथे चोर से अकेले बोरी उठाते नहीं बन रही थी। उस समय पण्डितजी जाग रहे थे। पण्डितजी ने उठे और चौथे चोर के लिये बोरी उठाकर उसके कंधे पर रखवा दी और फिर जाकर सो गये।

तीन चोरों ने घर जाकर बोरी रख दीं ।चौथा चोर भाई कुछ देर से आया तो माँ ने उससे देर होने का कारण पूछा और उसने बताया कि बोरी बहुत भारी थीं तो मैं अपने भाईयों को बोरी उठाने में सहयोग कर रहा था। माँ ने पूछा - तो तुमने अकेले बोरी कैसे उठाई ? चौथा बोला - पता नहीं, पर किसी ने मुझे सहयोग किया था। अंधेरा बहुत था, मुझे लगा कि मेरे किसी भाई ने सहयोग किया होगा..। पर तीनों भाई तो पहले ही यहाँ आ गये तो मुझे किसने सहयोग किया ?

तब माँ ने कहा कि मैं समझ गई तुम लोग आज पण्डित बनारसीदास जी के यहाँ चोरी करके आये हो और उन्हीं ने इसे सहयोग किया होगा। सुबह जाकर पण्डितजी का पूरा सामान वापस करके आना। इतने सज्जन पुरुष के यहाँ चोरी कैसे की ? और सुबह होते ही चारों चोर पण्डितजी का सारा सामान वापस कर आये और अपने अपराध के लिये क्षमा मांगी।


## सहयोग आमंत्रित

संस्था की योजनाओं में आपका आर्थिक सहयोग सादर आमंत्रित है ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| शिरोमणि संरक्षक | - 1 लाख रुपये | परम सहायक | - 21 हजार रुपये |
| परम संरक्षक | - 51 हजार रुपये | सहायक | - 11 हजार रुपये |
| संरक्षक | - 31 हजार रुपये | सहायक सदस्य | - 5 हजार रुपये |
| | | सदस्य | - 1 हजार रुपये |

प्रत्येक सहयोगी को सदस्य को छोड़कर चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा । संस्था द्वारा तैयार होने वाली समस्त सामग्री और साहित्य आपको निःशुल्क भेजा जायेगा । आप अपनी सहयोग राशि आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि. जबलपुर के नाम से चैक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से बनाकर भेजें । आप सहयोग राशि हमारी संस्था के **पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर** के **बचत खाता क्रमांक 1937000101026079** में **Online** जमा करा सकते हैं ।

# शब्दों का अपमान न करें

शब्द को ब्रह्म कहा जाता है । ये शब्द अक्षरों से मिलकर बनते हैं । इन्हीं अक्षरों से मिलकर जिनवाणी की रचना होती है । हम साधर्मी प्रत्यक्ष रुप से जिनवाणी की अविनय नहीं करते परंतु शब्दों और अक्षरों के विनय में ध्यान नहीं रख पाते । हम दैनिक उपयोग में न्यूज पेपर का प्रयोग कई कार्यों के लिये करते हैं । जैसे- गंदगी साफ करना, कांच साफ करना, सफर में इस पर रखकर कुछ खाना । इन कार्यों से उसमें लिखे हुये शब्दों और अक्षरों से ब्रह्म का अपमान होता है । इससे ज्ञानावरणी कर्म का बंध होता है । इसलिये हमें किसी प्रकार के अक्षरों या शब्दों का किसी भी प्रकार से अविनय नहीं करना चाहिये ।

## न्यूज पेपर पर खाने से होने वाले नुकसान

अक्सर कई लोक सफर या घर में न्यूज पेपर पर कुछ सामग्री रखकर खाते हैं । भारत सरकार की संस्था ऋअडञख के अनुसार न्यूज पेपर की इंक में कई टॉक्सिन्स होते हैं जो फूड में कई तरह के विपरीत प्रभाव छोड़ते हैं । प्रिंटिंग इंक में मल्टीपल बायो-एक्टिव मटेरियल्स,हार्मफुल कलर्स, पिगमेंटस, इंक स्टेबलाइजर यूज होते हैं । साथ ही प्रिंटिंग इंक के प्रयोग होने वाला पैथेलेट केमिकल पेट के पाचन तंत्र को खराब करने के साथ पेट दर्द का कारण भी बन सकता है । न्यूजपेपर की इंक बहुत जल्दी पानी और तेल में मिल जाती है और वह भोजन या अन्य सामग्री लगातार खाने से पेट में पहुँच जाती है जिससे कैंसर की संभावना बढ़ जाती है । इसलिये न्यूज पेपर का प्रयोग ऐसे कार्यों में न करके शब्दों के अपमान से बचें और अपने स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें ।

## एक व्यक्ति ऐसा भी...

इसे पर्यावरण या देश का प्रेम ही कहा जायेगा कि एक व्यक्ति पौधों की सुरक्षा, उसके विकास के लिये अपने वेतन की राशि का बड़ा हिस्सा खर्च कर देता है । बात है भोपाल के पर्यावरण प्रेमी श्री सुनील दुबे की । इन्हें वृक्ष मित्र भी कहा जाता है । लोग केवल फोन करके पौधों संबंधी अपनी मांग और स्थान बताते हैं और निश्चित समय पर सुनील जी पौधे और पानी लेकर पहुँच जाते हैं । आपके द्वारा तय स्थान पर वे पौधे लगायेंगे और समय-समय पर पानी और उसी आवश्यक व्यवस्था करेंगे और लोगों से इसके बदले में वे लेते है पौधे बचाने का संकल्प । दुबेजी पिछले 8 वर्षों में 1 लाख से अधिक पौधे बांट चुके हैं, लगभग 75 हजार पौधे स्वये लगा चुके हैं साथ ही चार वीरान पार्कों को हरा-भरा कर चुके हैं । संसार में अनेक तरह के लोग हैं उनमें कुछ ऐसे ही विरले व्यक्तित्व भी हैं ।

# दांत और जीभ की लड़ाई

दांतन की जीभ से भई एक बार रार।
बोले दांत जीभ से तुझे देंगे मार।।

बड़े बोल मत बोल मूर्ख चबड़-चबड़ क्यों करती है।
हम बत्तीस अकेली तू क्या मरने से नहिं डरती है।।

बीच हमारे पागल होकर तू हरदम आवे जावे।
एक बार जो धर दबायें तो तेरा पता नहीं पावे।।

हम हड्डी के दांत बड़े मजबूत वज्र की निशानी हैं।
पत्थर तक का चबा जायें तो तेरी कौन कहानी है।।

तू ढिलमिली पिलपिली जीभ 100 ग्राम के चमड़ी की।
जो घर में से दें निकाल दें तो, कीमत न हो दमड़ी की।।

तू है बड़ी दुष्ट अन्यायी, व्यर्थ हमें धमकाती है।
मेहनत करें रात दिन हम, तू बैठी-बैठी खाती है।।

चना चबैना कंकड़ भोजन हमसे ही चबवाती है।
आप मुलायम दूध मलाई रबड़ी हलवे खाती है।।

गन्ने और आम की गुठली हमें चूसने देती है।
जो रस निकले मीठा-मीठा उसे स्वयं पी लेती है।।

हमें खड़े कर दरवाजे पर आप चैन से सोती है।
सारे घर को घेर अकेली फिर भी रोती रहती है।।

सुन अपमानजनक दांतों की बातें जिव्हा भी भड़की।
क्रोधित हो आपे से बाहर इकदम बिजली सी कड़की।।

अरे मान से भरे मूर्खो तुम सब मुझसे क्यों लड़ते हो ?
मुझे अकेली पाकर क्यों बत्तीसों व्यर्थ अकड़ते हो ?

तुम्हें नहीं मालूम जगत में सबसे बढ़कर मेरा बल।
एक बार जो बिगड़ूँ तो दुनियां में हो कोलाहल।।

जिस पर मैं नाराज हुई करती उसकी बरबादी हूँ।
तोप छुरी बन्दूक से बड़ी मैं एटम बम की दादी हूँ।।

बड़े-बड़े राजाओं के मैंने ही शीश कटाये हैं।
हिटलर चर्चिल मुसोलिनी मुझसे ही पलते आये हैं।।

मैंने ही तो रावण के क्या खट्टे दांत कराये थे।
मैंने ही कौरव-पांडव दोनों आपस में लड़वाये थे।।

मैंने ही सीताजी का जंगल वास कराया था।
मैंने ही तो लव कुश के दिल में जोश जगाया था।।

तुम बत्तीस अकेली मैं तुममें आऊँगी और जाऊँगी।
एक बात ऐसी कह दूँ तो बत्तीसों को तुड़वाऊँगी।।

सुनकर बात जीभ की सारे दांत डरे कांपे थर्राये।
अरी बहन माफकर हमको हम सब तुझसे हैं हारे।।

तू है बहन हमारी सच्ची हम सब तेरे भाई हैं।
रहें परस्पर मिलकर दोनों घर की बुरी लड़ाई है।।

जीभ और दांतों का झगड़ा ये हमको सिखलाता है।
कभी किसी से लड़ो न 'मक्खन' यदि चाहो सुख साता है।।

**- भव्य प्रमोद से साभार**

## दुकानदार

एक सामान बेचने वाला अपने गधों पर अलग तरह का सामान लगा हुआ था। एक व्यक्ति ने पूछा–भाई इनमें क्य रखकर बेच रहे हो वह बोला– इन पाँच गधों पर पांच तरह का सामान है। इनमें एक पर अत्याचार, दूसरे पर घमंड, तीसरे पर ईर्ष्या, चौथे पर बेईमानी और पाँचवे पर मायाचारी लिये जा रहा हूँ। तो व्यक्ति ने आश्चर्य से पूछा – क्या इनको भी कोई खरीदता है ? गधे वाले ने कहा – हाँ जी ! क्यों नहीं ये माल तो बहुत बिकता रहता है। देखिये पहले गधे का माल राजा, दूसरे को धनवान, तीसरे को विद्वान, चौथे को व्यापारी और पाँचवे को स्त्रियाँ खरीदने के लिये हमेशा उत्सुक रहती हैं। पूछने वाला व्यक्ति विचार करता हुआ चला गया।

# रावण को राक्षस क्यों कहा जाता है ?

रावण के पूर्वजों को राक्षस जाति के एक देव ने सहयोग किया था और साथ ही नौ हीरों वाला एक हार प्रदान किया था। और नौ हीरों वाले हार में उसके नौ चेहरे दिखाई पड़ते थे, चेहरे को आनन भी कहा जाता है इसलिए रावण को दशानन कहने की पद्धति चालू हो गई। रावण के दस नहीं बल्कि एक ही सर था। देव की सहयोग की भावना और अपनत्व को देखकर पूर्वजों ने अपने वंश का नाम राक्षस वंश रख लिया। इसी वंश में रावण का जन्म हुआ। रावण राक्षस नहीं बल्कि अर्द्धचक्रवर्ती प्रतिनारायण था। जिनेन्द्र भगवान का परम भक्त और प्रकांड विद्वान था। राक्षस वंश में होने के कारण लोग उसे राक्षस कहने लगे।

## प्रेरक प्रसंग

## कड़वा सच

एक युवक ने अपने दादा से पूछा कि दादाजी आप लोग पहले कैसे रहते थे न कोई टेक्नोलॉजी, न कम्प्यूटर, न गाड़ियाँ, न मोबाइल.....।

दादाजी ने जबाब दिया - जैसे तुम लोग आजकल रहते हो ... न जिनदर्शन, न पूजा, न दया, न शर्म, न विनय, न आदर।

दादाजी का उत्तर सुनकर युवक चुपचाप वहाँ से चला गया।

## स्वाद और विवाद

स्वाद और विवाद दोनों छोड़ दो स्वाद छोड़ो तो दोनों को फायदा और विवाद छोड़ो तो समाज को फायदा।

# दानवीर भामाशाह

महाराणा प्रताप की सेना को हराकर अकबर की सेना ने चित्तौड़गढ़ पर अधिकार कर लिया था। महाराणा प्रताप अरावली पर्वत के वनों में अपने परिवार और कुछ राजपूत सैनिकों के साथ यहाँ-वहाँ भटक रहे थे। भोजन की कोई व्यवस्था भी नहीं थी। कहा जाता है कि उन्हें घास की रोटी भी खानी पड़ती थी। इन सब संकटों के बीच महाराणा को एक ही चिन्ता रहती थी कि चित्तौड़गढ़ को अकबर से कैसे मुक्त कराया जाये ? पर उनके पास खाने की भी व्यवस्था नहीं थी तो सैनिकों और अन्य खर्च के लिये धन कहाँ से लाते? अन्त में निराश होकर एक दिन महाराणा ने अपने सैनिकों को समझाकर उन्हें घर वापस लौटने को कहा।

जब महाराणा अपने सैनिकों को छोड़कर महारानी और बच्चों के साथ पैदल जाने लगे तब घोड़े पर सवार होकर महाराणा के मंत्री भामाशाह आये और महाराणा के चरणों में बैठकर जोर-जोर से रोने लगे और बोले - आप हम लोगों को अनाथ करके कहाँ जा रहे हैं? महाराणा ने भामाशाह को गले लगाकर कहा - जब आज भाग्य ही हमसे रूठ गया है तो तब साथ रहने से क्या लाभ ?

भामाशाह ने परिस्थिति समझकर कहा - महाराणा! आप मेरी एक बात स्वीकार करें। महाराणा बोले - मैंने तुम्हारी बात कभी नहीं टाली। कहो क्या बात है ? इतना सुनकर भामाशाह ने अपने साथ आये सेवकों को इशारा किया तो वे सेवकों ने अपने साथ लाई कई थैलियों को महाराणा के सामने उलट दिया और देखते ही देखते महाराणा के सामने सोने के सिक्कों का ढेर लग गया। भामाशाह हाथ जोड़कर महाराणा से बोला कि महाराणा! यह सब धन आपका है। मैंने और मेरे पूर्वजों ने आपके और राज्य के सहयोग ये धन कमाया है। देश हित में इसे स्वीकार कर देश का हित करें। महाराणा भामा शाह को देश प्रेम देखकर आश्चर्यचकित होकर कहा - तुम धन्य हो भामाशाह! देश का उद्धार तुम जैसे उदार पुरुषों से ही होगा। इसके बाद महाराणा ने उस धन से सेना को एकत्रित कर अकबर से अपना राज्य वापस लिया और उदयपुर को अपनी राजधानी बनाया। भामाशाह दिगम्बर जैन कुल के वीर पुरुष थे और उन्होंने दान राशि देने के साथ हाथ में तलवार लेकर मुगल शासकों से युद्ध भी लड़ा। आज भी राजस्थान सरकार द्वारा दानवीर भामाशाह की स्मृति में प्रतिवर्ष समाज में योगदान देने वाले दानवीरों को भामाशाह पुरुस्कार दिया जाता है।

कथा सुनो पुराण की

# परिणामों का फल

अभयकोष काकन्दी नगर के राजा थे । उनकी रानी का नाम अभयमती था । दोनों परस्पर बहुत प्रेम था । एक दिन अभयकोष राजा घूमने के लिये जंगल की ओर निकले। रास्तें में नाव चलाने वाला मल्लाह एक बड़े और जीवित कछुये के चारों पांव रस्सी से बांधकर और लकड़ी में लटकाकर चला जा रहा था । पापी अभयकोष ने जैसे ही उस कछुये को देखा तो मात्र अपने आनंद के लिये उस कछुये के चारों पैर काट दिये । मूर्ख लोक न्याय-अन्याय, हिंसा-अहिंसा का जरा भी विवेक नहीं रखते । कछुआ उसी समय तड़प-तड़पकर मर गया । पूर्व में ही आयु बंधने के कारण उस कछुए ने उसी अभयकोष की रानी अभयमती के गर्भ से उसके पुत्र के रूप में जन्म लिया । उसका नाम चण्डवेग रखा गया । समय के साथ चण्डवेग युवा हो गया ।

एक राजा अभयकोष चन्द्रग्रहण देख रहे थे,तभी उन्हें विचार आया कि समय कैसे बीता जा रहा है और एक दिन जीवन का अंत हो जायेगा और मैं मूर्ख विषय-भोगों में फंसा रहा और कभी अपने आत्मकल्याण की ओर ध्यान ही नहीं दिया । महान जैन धर्म को पाकर भी मोह-माया में फंसा रहा । अब आत्मकल्याण का समय है । ऐसा विचारकर राजा ने अगले ही दिन अपने पुत्र चण्डवेग को राज्य सौंपकर दिगम्बर दीक्षा अंगीकार कर ली ।

इसके बाद अभयकोष आत्मध्यान करने जंगल चले गये और निरंतर विहार करने लगे । कई वर्षों बाद वे विहार करते-करते काकन्दी नगर की ओर आये । चण्डवेग उसी समय उनके सामने से निकला । कई वर्ष बीत जाने के कारण वह अपने पिता को नहीं पहचान पाया और उसे अपना पूर्व भव याद आ गया और उसने पूर्व बैर के कारण क्रोध में मुनि अभयकोष के दोनों हाथ और पैर काट दिये ।

अभयकोष मुनि पर घोर उपसर्ग हुआ, पर वे पर्वत के समान अचल खड़े रहे और आत्मध्यान में लीन रहे । अपनी अपूर्व आत्म साधना के बल पर उन्होंने केवलज्ञान प्राप्त कर लिया और वे कुछ समय के बाद मोक्ष चले गये ।

# जाप की माला में 108 दाने क्यों ?

**समरम्भ समारम्भ आरम्भ, मन वच तन कीने प्रारम्भ।**
**कृत-कारित-मोदन करिके, क्रोधादि चतुष्टय धरिके।।**

आप जानते हैं कि जाप की माला में 108 मोती या दाने होते हैं। हमारी दिनचर्या में प्रतिदिन 108 प्रकार से पापों के कार्य होते हैं उनके प्रायश्चित करने के लिये 108 बार मंत्र का स्मरण किया जाता है।

**3 समरम्भ-समारम्भ-आरम्भ गुणा**
**3 मन से-वचन से-काय से- गुणा**
**3 कृत से - कारित - अनुमोदना गुणा**
**4 कषाय क्रोध से -मान से -माया से -लोभ से** 3*3*3*4 = 108

**समरम्भ** - किसी कार्य को करने से पूर्व कार्य करने का भाव मन में आने भाव को समरम्भ कहते हैं।
**समारम्भ** - किसी कार्य को करने के लिये साधन जुटाना समारम्भ कहते हैं।
**आरम्भ** - किसी कार्य को प्रारम्भ करना आरम्भ कहलाता है।
**मन से** - किसी कार्य को मन विचार करना।
**वचन से** - किसी कार्य के बारे में वचनों से कहना।
**काय** - किसी कार्य को अपने शरीर के अंगों से करना।
**कृत** - किसी कार्य को स्वयं करना कृत है।
**कारित** - किसी कार्य को स्वयं न करके दूसरे से करवाना कारित है।
**अनुमोदना** - किसी कार्य को स्वयं तो न करना परन्तु किसी के द्वारा किये जा रहे कार्य की प्रशंसा करना अनुमोदना है।

हम प्रत्येक कार्य को 4 कषाय क्रोध, मान, माया, लोभ के आवेग में करते हैं। इस प्रकार इन पापों के प्रायश्चित हेतु आत्मकल्याण की भावना से माला का जाप किया जाता है।

इसी तरह पंचपरमेष्ठी के108 गुणों की प्राप्ति हेतु भी माला का जाप किया जाता है। अरहन्तों के नव लब्धियों के 9, सिद्ध के आठ गुण, आचार्य के 36 गुण, उपाध्याय के 25 और साधुओं के 28 मूलगुण ।

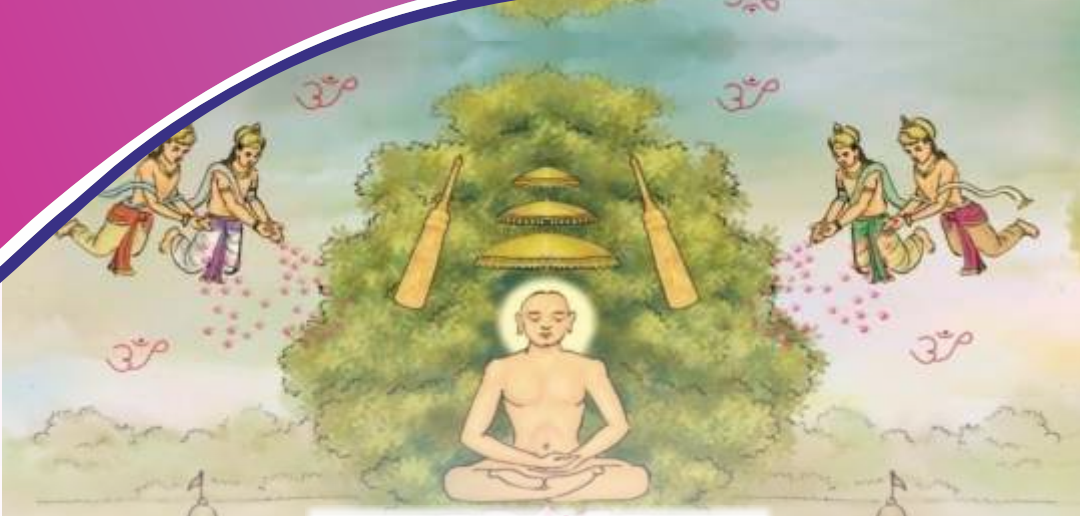

# समवशरण

तीर्थंकर मुनिराज को केवलज्ञान होने पर सौधर्म की आज्ञा से कुबेर विक्रिया द्वारा समवशरण की रचना करता है।

तीर्थंकर के उपदेश देने के स्थान को समवशरण कहते है।

समवशरण की रचना पृथ्वी से 5000 धनुष ऊपर आकाश में होती है। जिसमें ऊपर जाने के लिये 20 हजार सीढ़ियाँ होती है।

समवशरण का ऐसा अतिशय होता है कि अंधों को दिखने लगता है, बहरों को सुनाई देने लगता है, लंगड़े चलने लगते हैं, गूंगें बोलने लगते हैं।

समवशरण में परस्पर जाति विरोध जीव जैसे - गाय-शेर, बिल्ली-चूहा अपनी बैर बुद्धि छोड़कर परस्पर मित्र हो जाते हैं।

समवशरण में विराजमान अरहंत का मुख चारों दिशाओं में दिखाई देता है।

समवशरण का विस्तार एक योजन से बारह योजन तक रहता है।

समवशरण में साढ़े बारह करोड़ बाजों की मधुर ध्वनि होती है जिसे सुनने मात्र से भूख-प्यास आदि सभी रोगों की पीड़ा समाप्त हो जाती है।

जहाँ समवशरण की रचना होती है वहाँ छःऋतुओं के फल-फूल एक साथ फलते हैं।

समवशरण में देवों के द्वारा बनाये गये अशोक वृक्ष को देखकर सभी लोगों का दुःख नष्ट हो जाता है।

समवशरण में बारह सभायें होती हैं। पहली सभा में गणधर, मुनिराज, दूसरी सभा में कल्पवासी देवों की देवियाँ, तीसरी सभा में गणिनी सहित आर्यिकायें और स्त्रियाँ, चौथी सभा में चक्रवर्ती सहित मनुष्य, पांचवी सभा में ज्योतिषी देवा की देवियाँ, छठवीं सभा में व्यंतर देवों की देवियां, सातवीं सभा में भवनवासी देवों की देवियाँ, आठवीं सभा में भवनवासी देव, नवमीं सभा

में व्यंतर देव, दसवीं सभा में ज्योतिषी देव, ग्यारहवीं सभा में कल्पवासी देव और बारहवीं सभा में सभी तिर्यन्च बैठते हैं ।

समवशरण के मध्य स्थान को गंधकुटी कहत हैं । गंधकुटी के मध्य भाग में पादपीठ सहित सिंहासन होता है जिसपर भगवान चार अंगुल ऊपर आकाश में स्थित रहते हैं ।

भगवान के पीछे एक भामंडल होता है जिसमें देखने पर तीन भूतकाल के, तीन भविष्य के और एक वर्तमान का भव इस तरह कुल ७ भव दिखाई देते हैं ।

समवशरण में सभी जीवों को अपनी-अपनी भाषा में दिव्यध्वनि सुनाई देती है ।

समवशरण में तीव्र रुचि वाले भव्य जीव ही भगवान की वाणी सुनते हैं, तीव्र मिथ्यादृष्टि और अभव्य जीव समवशरण के बाहर नाट्य शालाओं, देवियों के नृत्य, बागों की सुंदरता में ही उलझकर रहे जाते हैं ।

समवशरण में भगवान के दर्शन और वाणी के निमित्त से अनेक जीव सम्यग्दर्शन प्राप्त करते हैं, अनेक जीव दिगम्बर दीक्षा अंगीकार कर केवलज्ञान प्राप्त करते हैं और उनमें से कई जीवों को निर्वाण की प्राप्ति हो जाती है ।

# जिनदेशना अहिंसा अभियान

प्रतिवर्ष अहिंसा सिद्धान्त के उद्घोषक भगवान महावीर के निर्वाण महोत्सव दीपावली के अवसर पर अनंत जीवों की हिंसा से जनजागृति करने हेतु जिनेदशना द्वारा अहिंसा महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। पिछले वर्ष भी इस अभियान का संचालन किया गया था और इस अभियान में लगभग 5000 बच्चों ने फार्म भरकर पटाखे न फोड़ने का संकल्प लिया था और ड्रा द्वारा लगभग 600 बच्चों का पुरस्कार दिया गया था। सभी बच्चों को प्रमाण पत्र भी दिया गया। इस वर्ष भी इस अभियान का पिछले वर्ष की तरह किया जा रहा है। इस वर्ष भी आकर्षक पुरस्कार दिये जायेंगे। आप भी इस अहिंसा अभियान में सहभागी बन सकते हैं।

**हमारे सहयोगी :** श्री प्रतीक भाई गांधी, इंदौर, श्री विवेक बज(CA)-श्रीमति अनुभा बज, पुणे, श्रीमति हिरल-श्री नयन शास्त्री, हैदराबाद, कु.ध्याना-श्रीमती भविशा आत्मदीप भायाणी, चेन्नई, श्रीमती नीलू जैन, जयपुर, श्रीमती नीलिमा संजय कुमार जी जैन, पुणे, श्री अशोक बाबीसी, मुम्बई, श्री सुरेन्द्र पाटोदी, कोलकाता, श्री शरदभाई मेहता, सोनगढ़, श्री राजीव जैन, आगरा ।

| अहिंसा सारथी - 25000/- | अहिंसा स्तम्भ - 15000/- | अहिंसा दीप - 11000/- | अहिंसा अनुमोदक - 5100/- |
|---|---|---|---|

आप अपनी स्वीकृति 9752756445 पर व्हाट्सएप के माध्यम से दे सकते हैं।

संयोजक - विराग शास्त्री, जबलपुर 9300642434

# सोशल मीडिया बना जान का दुश्मन

## 2024 में 18000 बच्चे मानसिक तनाव के कारण अस्पताल में भर्ती कई ने की आत्महत्या - पारिवारिक सम्बन्ध बिगड़े

**तुम मेरा फोन छीने की हिम्मत कैसे की ? नालायक कहीं के, बेवकूफ, पागल अनपढ़ कहीं की.. खराब कर दिया ना मेरा फोन.... मेरे सारे काम रुक गये दुबारा मेरा फोन छुआ तो तेरे हाथ तोड़ दूँगा**

ये पति-पत्नी के बीच का वह संवाद है जो आज कई घरों में देखने को मिल रहा है। जिसे जीवन भर का प्यार भरा सम्बन्ध कहा जाता है उसमें एक 10-15 हजार के मोबाइल ने दूरियाँ पैदा कर दीं हैं। यह मोबाइल परिवार के स्नेहिल सम्बन्धों में दरार पैदा कर ही रहा है साथ ही युवाओं में मानसिक तनाव भी पैदा कर रहा है। कुछ दिनों पूर्व ब्रिटेन से आई एक रिपोर्ट चौंकाने वाली है। बच्चों के मानसिक स्तर को सुधारने की दिशा में काम करने वाली संस्था नेशनल सोसायटी फॉर द प्रिवेंशन ऑफ क्रूएलिटी टू चिल्ड्रन ने एक रिपोर्ट में कहा कि 11 से 18 साल के किशोर बच्चे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, व्हाट्एप जैसे सोशल साइट्स के शिकार हो रहे हैं। किशोरों की इसकी लत लग रही है। इसके बिना उनका एक दिन भी रहना भी मुश्किल है। सोशल साइट्स में वे इतना डूब जाते हैं कि वे बाहर की दुनिया से कट

जाते हैं। आजकल के दौर में जो भी समाचार आते हैं उनमें से 90 प्रतिशत नकारात्मक समाचार हैं जिससे वे हताशा के शिकार हो रहे हैं और स्वयं को नुकसान पहुँचा रहे हैं। जैसे - नींद न आने पर नींद की गोली लेना, हाथ की नस काट लेना, खुद को आग लगा लेना। सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव के कारण पिछले एक वर्ष में ब्रिटेन जैसे अतिविकसित देश में 18,778 बच्चों ने खुद को नुकसान पहुँचाने की कोशिश की जिससे उन्हें अस्पताल में भर्ती करना पड़ा। भारत में भी इसका दुष्प्रभाव देखने को मिलता रहता है। मोबाइल न मिलने के कारण 7 वर्ष के भाई द्वारा अपनी बहन की हत्या, पति-पत्नी में तलाक के बढ़ते मामले, कम उम्र में प्यार जैसे बेकार के काम, आंखों में जलन, आंखों की रोशनी कम होना, सिर दर्द, माइग्रेन, डिप्रेशन जैसे मामले हर शहर में देखने को मिल रहे हैं। जियो जैसे कम्पनियाँ अपने प्रोडक्ट की सफलता के लिये इंटरनेट डाटा और कॉलिंग सुविधा कई महीनों के लिये फ्री में देकर इस समस्या को बढ़ाने में लगीं हुईं हैं।

आज के दौर में मोबाइल अनेक समस्याओं का समाधान भी है और कई समस्याओं का पैदा कर रहा है। मोबाइल को प्रयोग न करना तो लगभग असंभव है पर प्रयोग में सावधानी और अनावश्यक समय बरबादी न करना हम पर निर्भर है। यदि हम समय पर सावधान नहीं हुये तो हमें अपने परिवार में भी कोई न चाही घटना सुनने को मिल सकती है।

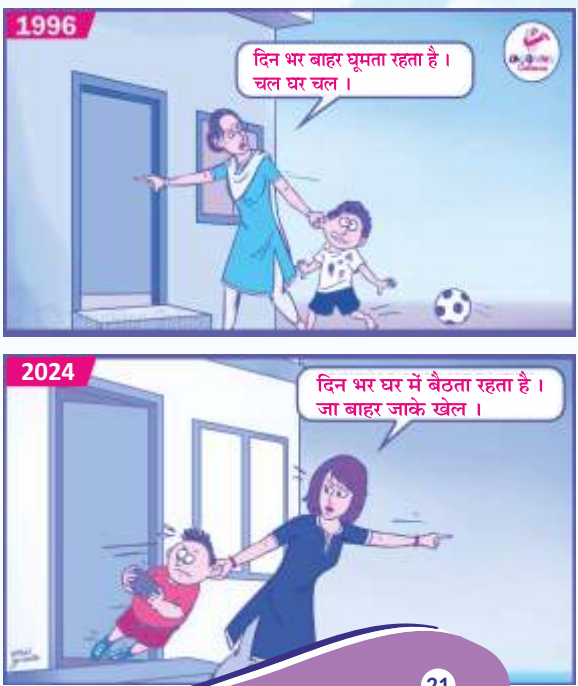

## हमारे गौरवशाली ऐतिहासिक महापुरूष

# अमर शहीद अमरचंद बांठिया

भारत के स्वाधीनता संग्राम में देश के अनेक क्रांतिकारियों के साथ जैन समाज के अनेक श्रावकों ने भी अपना बहुमूल्य योगदान दिया । उनमें से एक है सेठ अमरचंद जी । सेठ अमरचंद मूलरूप से बीकानेर (राज.) के निवासी थे । व्यापार के कारण वे अपने पिताजी अबीरचंद के साथ ग्वालियर आकर बस गये । जैन धर्म के सिद्धांतों पर अगाध श्रद्धान रखने वाले और आचरण का पालन करने वाले सेठ अमीरचंद अपनी सज्जनता, ईमानदारी और परिश्रम के कारण पूरे नगर में सम्मान के पात्र हो गये थे । इससे प्रभावित होकर ग्वालियर राजघराने ने इन्हें नगर सेठ की उपाधि देकर राजघराने के सदस्यों के समान सोने के कड़े पैरों में पहनने का अधिकार दिया । उस समय मात्र राजघराने के सदस्यों को ही पैर में सोने के कड़े पहनने का अधिकार था । बाद में उन्हें ग्वालियर राजघराने के राजकोष का प्रभारी नियुक्त किया गया।

अमरचंद धर्मप्रेमी तो थे ही वे नियमित जिनमंदिर जाते थे । 1855 में एक संत चातुर्मास के लिये पधारे, उनके प्रवचनों से प्रभावित होकर वे विदेशी राज्य और विदेशी वस्तुओं के खिलाफ हो गये । 1857 की क्रांति में अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने वाले क्रांतिकारियों को उन्होंने राजकोष का सारा धन और अपनी पैतृक सम्पत्ति दे दी । उनका मानना था कि राजकोष जनता की भलाई के लिये जनता से ही लिया गया है इसलिये इसे अंग्रेजों से मुक्ति के लिये उन्हें राजकोष सौंपना कोई गलत कार्य नहीं है । इस समय ग्वालियर राजघराना अंग्रेजों के साथ था और अंग्रेजों ने सेठजी राजद्रोही घोषित कर गिरफ्तार करने का आदेश दे दिया । सेठ जी छिपते हुये भी क्रांतिकारियों का करते रहे । आखिरकार एक दिन वे पकड़े गये और उन पर मुकदमा चलाकर उन्हें जेल भेज दिया गया ।

जेल में सेठ जी को भयंकर कष्ट दिये गये । मुर्गा बनाना, पेड़ से उल्टा लटकाकर उन्हें हंटर मारना, हाथ-पैर बांधकर चारों ओर से खींचना, मूत्र पिलाने जैसी अमानवीय अत्याचार

किये गये । अंग्रेज चाहते थे कि वे सरकार से मांफी मांग लें, परंतु सेठजी इसके लिये तैयार नहीं हुये । अंग्रेजों ने उनके आठ वर्ष के पुत्र को पकड़ लिया और सेठ जी को धमकी दी कि यदि तुमने मांफी नहीं मांगी तो तुम्हारे पुत्र को मार दिया जायेगा । इस पर भी सेठ जी नहीं माने तो उनके पुत्र को उनके सामने ही तोप के मुंह से बांधकर बम से उड़ा दिया गया । बच्चे के शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो गये । इतने पर भी अंग्रेजों का मन नहीं भरा और क्षेत्र की जनता में आतंक फैलाने के लिये सबके सामने फांसी देने का निर्णय लिया । सेठ जी अपने शरीर का मोह छोड़ चुके थे । उनकी अंतिम इच्छा पूछने पर उन्होंने नवकार मंत्र पढ़ने की अनुमति मांगी और फांसी वाली रात्रि को वे रात भर णमोकार मंत्र का जाप करते रहे । 22 जून 1858 को उन्हें फांसी पर लटकाया गया । परंतु आश्चर्यजनक रुप से रस्सी टूट गई । दूसरी बार उन्हें पेड़ की शाखा पर लटकाया गया तो शाखा टूट गई । तीसरी बार नीम के पेड़ की मजबूत शाखा पर उन्हें फांसी पर लटका दिया गया और शव को तीन दिन तक वहीं लटका रहने दिया ।

ग्वालियर में आज भी वह नीम का पेड़ है और प्रतिवर्ष 22 जून को बड़ी संख्या मे लोग आकर उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं और उनके योगदान को याद करते हैं ।

## पंतग के मांझे से पक्षियों को कटता देखकर १०० वर्ष पुराना व्यापार छोड़ा

बात कोटा के अब्दुल मजीद की है। इनकी 100 वर्ष पुरानी पतंग और मांझे की बहुत प्रसिद्ध दुकान है। कई पीढ़ियों से उनका परिवार यही व्यवसाय कर रहा है। दूर-दूर गांवों से लोग उनकी पंतग और मांझा खरीदने आते थे। उनकी दुकान का नाम मागीलाल पतंग वाला था। तीन वर्ष पहले मांझे से पक्षियों की होने वाली मौतें, पंतग लूटते समय बच्चों के गिरकर मरने और घायल होने की घटनाओं ने उनका हृदय परिवर्तन कर दिया और उन्होंने अपना पैतृक कार्य बन्द करने का निर्णय किया। लाखों रुपये की आमदनी वाला काम छोड़ना बहुत बड़ा निर्णय था परन्तु पक्षियों की मौतों और अन्य दुर्घटनाओं को देखते हुये उन्होंने अपना यह कार्य बन्द खिलौनों की दुकान खोल ली। अब उनका परिवार भी खुश है और मन में शांति भी मिल गई है।

अब्दुल मजीद के निर्णय और उनकी भावना को कोटिशः धन्यवाद।।

कथा सुनो पुराण की -

# उपसर्ग में आराधना

दक्षिण भारत के कुम्भकार नाम के पुराने शहर में राजा दंडक का शासन था और उनकी पत्नी का नाम सुव्रता था। सुव्रता सुंदर होने के साथ बहुत ज्ञानवान महिला थी। राजा के मंत्री का नाम बालक था, वह जैन धर्म से बहुत द्वेष रखता था। एक दिन नगर में पांच साथ मुनिराजों का संघ आया। बालक मंत्री को अपने ज्ञान पर बहुत अभिमान था। वह मुनिराजों से शास्त्र पर बहस करने के लिये उनके आचार्य के पास जा रहा था तभी रास्ते में उसी संघ के खंडक नाम के मुनिराज रास्ते में मिल गये। बालक मंत्री उन्हीं से चर्चा करने लगा। मुनिराज के विशिष्ट ज्ञान और तर्कपूर्ण उत्तर के सामने बालक को अपना अपमान महसूस होने लगा, वह मुनिराज से बहस और झगड़ा करने लगा परंतु मुनिराज ने अत्यंत शांति से उसके सभी शंकाओं को दूर कर जैनधर्म की सिद्धि की। इससे बालक को और अधिक अपमान और शर्म महसूस हुई। उसने मुनिराजों से इस अपमान का बदला लेने का निश्चय किया।

उसने एक बहरूपिया को (नाटक करने वाला) लोभ देकर मायाचारी से मुनि का रूप रखने को कहा और उसे रानी के पास उनके महल में भेज दिया। वह बहरूपिया मुनि के वेश में रानी से गंदा मजाक और अशोभनीय व्यवहार करने लगा। इधर बालक मंत्री ने राजा से शिकायत की कि आप जिन दिगम्बर मुनिराजों की इतनी भक्ति करते हैं और इनकी सेवा में दिन-रात लगे रहते हैं वे ही आपकी प्रिय रानी के साथ कितना गंदा व्यवहार कर रहे हैं। आप स्वयं जाकर देखिये कि वह मुनि रानी के साथ किस तरह शर्मनाक भाषा कह रहे हैं।

राजा ने स्वयं जाकर बहरूपिये मुनि का व्यवहार देखा तो उन्हें बहुत क्रोध आया और स्वयं के विवेक से निर्णय न करके क्रोध में अंधे होकर आदेश दिया कि राज्य में जितने दिगम्बर जैन मुनि हैं सबको घानी (पुराने समय की तेल निकालने की लकड़ी की मशीन) पेल दिया जाये। बालक मंत्री तो यही चाहता था वह मन ही मन बहुत खुश हुआ। उसे अपने अपमान का बदला लेना था। राजा का आदेश पाते ही बालक मंत्री ने सारे मुनिराजों को पकड़ लिया और उन्हें घानी में डाल दिया। ऐसा भयंकर उपसर्ग जानकर मुनिराज अपने स्वभाव में लीन हो गये। इन मुनिराजों में से अधिकांश मुनिराजों ने आत्मध्यान के बल से सकल कर्म का नाश कर सिद्ध अवस्था प्राप्त कर ली और कुछ मुनिराजों ने उच्च स्वर्ग पद की प्राप्ति की। बालक मंत्री भी इतने भयंकर पाप का फल नरक आदि दुर्गतियों में भोगना पड़ा उसने भयंकर असहनीय कष्ट सहन किये।

धन्य हैं मुनिराज..... जिन्हें बालक मंत्री पर क्रोध नहीं आया बल्कि उपसर्ग को आत्म आराधना का उत्तम समय समझकर निर्वाण पद की प्राप्ति की।

प्रेरक प्रसंग

# गर्व किस पर

एक सम्राट मुनिराज के पास उपदेश सुनने पहुँचे। सम्राट ने बड़े गर्व से अपना परिचय दिया।

मुनिराज ने पूछा - तुम रेगिस्तान में भटक जाओ और प्यास से दम घुटने लगे और उस वक्त कोई गन्दे नाले का लोटा भर पानी लाकर तुमसे कहे - इस लोटे भर पानी का मूल्य आधा राज्य है तो तुम क्या करोगे ?

सम्राट ने कहा - मैं तुरन्त वही पानी ले लूँगा।

फिर मुनिराज ने कहा - यदि वह सड़ा पानी पेट में जाकर रोग उत्पन्न कर दे और तुम मरने लगो और उस समय एक वैद्य (डॉक्टर) पहुँचकर तुमसे कहे कि अपना बाकी बचा हुआ आधा राज्य दे दो तो मैं तुम्हें ठीक कर दूँगा। तब तुम क्या करोगे ?

राजा बोला - उसे आधा राज्य देकर अपने प्राणों की रक्षा करुँगा। जीवन ही नहीं तो राज्य किस काम का ?

तब मुनिराज ने कहा - जिस राज्य की कीमत एक लोटा सड़ा पानी और उससे उत्पन्न रोग से ठीक होने की दवा है - ऐसा राज्य किस काम का और उस पर घमंड क्या करना ?

# विशाल हृदय

पाण्डवों को वनवास देकर कौरव भाई बहुत खुश थे। वे सब खुशियाँ मनाने एक गन्धर्व विद्याधर के बाग पहुँच गये। गन्धर्व देवों ने सोचा कि इनकी खुशियों के उत्सव से पूरा बाग खराब हो जायेगा। उन्होनें कौरवों से उनके बाग में उत्सव मनाने से मना किया परन्तु कौरव नहीं माने। तब कौरवों को पकड़ने के लिये गन्धर्व आगे बढ़े तो सारे कौरव डरकर भाग गये पर उन्होंने दुर्योधन को पकड़ लिया। जब यह समाचार युधिष्ठिर को मिला तो उन्होंने कहा - हम घर में 100 कौरव और पाण्डव पाँच हैं परन्तु दूसरों के लिये 105 हैं। उन्होंने अर्जुन को भेजकर दुर्योधन को छुड़वा लिया।

**संदेश - परिवार के मतभेद सामाजिक जीवन में कमजोरी नहीं बनना चाहिये ।**

# जैन शब्द की प्राचीनता

- जोण्हाणं णिरवेक्खं जैनानां निरपेक्षं - आचार्य कुन्दकुन्द - प्रवचनसार 3/51
- जैनेषु शुद्धात्मज्ञानदर्शनप्रवृत्तवृत्तितया साकारनाकारचर्यायुक्तेषु
  - आचार्य अमृतचंद्र आत्मख्याति टीका - प्रवचनसार 3/51
- निश्चयव्यवहार मोक्षमार्ग परिणत जैनानां - आचार्य जयसेन, तात्पर्यवृत्ति प्रवचनसार 3/51
- जेणाणं पुण वयणं सम्मं खु कहंचिवयणादो - आचार्य नेमिचन्द्र, गोम्मटसार कर्मकाण्ड - गाथा 895
- जैनानां पुनः वचनं सम्यक्खलु कथंचिद्वचनात् । जैन मत के वचन कथंचित् बोलने से सत्य हैं।
- सर्वभाषा परिणतां जैनींवाचमुपास्महे। - आचार्य हेमचंद्र - काव्यानुशासन

# हिन्दु ग्रन्थों में जिनधर्म

- **ऋग्वेद** - अर्हन्इदं दयसे विश्वम्बम्
- **मुद्रा राक्षस रचनाकार - कवि कालिदास**
  णोहपाहिपेज्जाणं अलिहन्ताणंसासणं पडिवज्जह।
  **जो अरिहंत के शासन को स्वीकार करेंगे वे मोह व्याधि के वैद्य हैं।**
- **हनुमन्त नाटकः -**
  अर्हन्त इत्यथ जैन शासनरताः
  जैन शासनरत भक्त अपने आराध्य देव को अरहंत कहते हैं।
- **दक्षिणामूर्ति सहस्रनाम -**
  शिवोवाच - जैन मार्गरतो जैन जिन क्रोधो जितामयः।
  भगवत का नाम जैनमार्ग में रत और जैन कहा, सो इसमें
- **रुद्रयामलतंत्र में भवानी सहस्रनाम में ऐसा कहा है -**
  खुण्डासना जगद्धात्री बुद्धमाता जिनेश्वरी।
  जिनमाता जिनेन्द्रा च शारदा हंसवाहिनी।।
  भवानी के नाम जिनेश्वरी आदि कहे, इसलिये जिनका उत्तमपना
- **गणेश पुराण में कहा है -**
  जैन पशुपतं सौख्यं
- **व्यासकृत सूत्र में कहा -**
  जैना एकस्मिन्नेव वस्तुनि उबयं प्ररूपयन्ति स्याद्वादिनः।
  उनके शास्त्रों में जैन निरूपण है, इसलिये जैन मत का प्राचीनपना सिद्ध होता है।
- **भगवत के पंचम स्कन्ध में ऋषभावतार का वर्णन है -**
  ध्यानमुद्रा धारी, सर्वाश्रम द्वारा पूजित कहा है।

प्रश्न आपके-उत्तर जिनागम के

# शंका समाधान

**प्रश्न- 1. जिनेन्द्र भगवान की शोभायात्रा में चप्पल-जूते पहनने में और कुछ खाने में कोई दोष है या नहीं ?**

**उत्तर -** जिनेन्द्र रथयात्रा के समय कुछ भी खाने में दोष लगता है एवं श्रीजी की रथयात्रा में चप्पल, जूते न पहनें तो यह जिनेन्द्र भगवान की विनय है ।

**प्रश्न- 2. जब 9 नारायण नरक जाते हैं तो उनके अतिशय क्यों होते हैं ?**

**उत्तर -** नारायण के कोई अतिशय नहीं होते।

**प्रश्न- 3. जब चौथे काल में ही मोक्ष होता है तो भगवान आदिनाथ तीसरे काल में ही मोक्ष कैसे चले गये ?**

**उत्तर -** मोक्ष कर्मभूमि के मनुष्यों को होता है। तीसरे काल के अंत में जब एक पल्य का आठवाँ भाग शेष रह जाता है तब कर्मभूमि का प्रारम्भ हो जाता है। इसी काल में भगवान आदिनाथ का जन्म हुआ। जब तीसरे काल का तीन वर्ष साढ़े आठ माह बाकी थे तक वे मुक्ति चले गये। यह हुण्डावर्पिणी काल का दोष है। इसी कारण पंचम काल में मोक्ष नहीं होता किन्तु पंचम काल में गौतम स्वामी, सुधर्म स्वामी और जम्बूस्वामी मोक्ष गये हैं।

**प्रश्न- 4. स्त्री सप्तम नरक क्यों नहीं जा सकती ?**

**उत्तर -** सप्तम नरक मात्र वज्रवृषभ नाराच संहनन शरीर वालों को होता और यह शरीर स्त्री पर्याय में नहीं होता ।

**प्रश्न- 5. अंधेरे कमरे में लाइट जलाकर भोजन कर सकते हैं या बना सकते हैं क्या ?**

**उत्तर -** भोजन प्राकृतिक प्रकाश में ही करना और बनाना चाहिये ।

**प्रश्न- 6. छठवे काल में धर्म रहेगा या नहीं ?**

**उत्तर -** छठवें काल में धर्म का नाश हो जायेगा।

**प्रश्न- 7. जैन संस्कृति में कौन - कौनसे स्वप्न प्रसिद्ध हैं ?**

**उत्तर -** तीर्थंकर की माता के 16 स्वप्न के अलावा जैन संस्कृति में सम्राट चन्द्रगुप्त और सम्राट भरत के 16 स्वप्न भी प्रसिद्ध हैं।

**प्रश्न- 8. चक्रवर्ती को छःखण्ड में कितने वर्ष लगे ?**

**उत्तर -** भरत चक्रवर्ती षट्खण्ड जीतने में साठ हजार वर्ष लगे थे।

समाचार

### स्वर्णपुरी सोनगढ़ में

# गुरुवाणी मंथन शिविर सम्पन्न

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई एवं श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विलेपारला मुम्बई द्वारा पूज्य गुरूदेवश्री कानजी स्वामी की साधना भूमि सोनगढ़ में दिनांक 11 से 15 अगस्त 2024 तक गुरूवाणी मंथन शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया, पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट, पण्डित ज्ञायक शास्त्री मोरबी, डॉ. अंकुर शास्त्री भोपाल एवं पण्डित सोमिलजी मेहता मुम्बई के द्वारा पूज्य गुरूदेवश्री कानजी स्वामी के प्रवचनों पर ही गहराई से मंथन कर स्वाध्याय किया गया। प्रतिदिन लगभग 9 घंटे विद्वानों के द्वारा स्वाध्याय किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित चैतन्य शास्त्री सोनगढ़ एवं पण्डित आतम शास्त्री सोनगढ़ के संयोजन एवं श्री विराग शास्त्री जबलपुर के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मध्य में कहान शिशु विहार सोनगढ़ के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

### तीर्थधाम ज्ञानोदय में

# पंचम यूथ कन्वेंशन का अभूतपूर्व आयोजन

युवाओं को जिनधर्म से जोड़े रखने के प्रयासों के अंतर्गत आयोजित हो रहे कार्यक्रमों में पंचम जिनदेशना यूथ कन्वेंशन भोपाल - विदिशा रोड पर दीवानगंज में स्थित तीर्थधाम ज्ञानोदय के भव्य परिसर में सफलता के साथ संपन्न हुआ। दिनांक 23 अगस्त से 26 अगस्त तक इस कार्यक्रम में डॉ. मनीष जी मेरठ, श्री संजय जी शास्त्री कोटा, श्री विपिन शास्त्री नागपुर एवं श्री अभयजी शास्त्री खैरागढ़ का मंगल सान्निध्य प्राप्त हुआ। प्रतिदिन प्रातः लघु विधानों के चार आयोजन हुये। इसके पश्चात् दिनभर कार्यक्रमों में पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के प्रवचन के अतिरिक्त लगभग 6 घंटे विद्वानों द्वारा रोचक शैली में अध्यात्म वर्षा हुई। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में ज्ञानोदय महाविद्यालय के छात्रों द्वारा नाटिका प्रस्तुत की गई और विशेष व्याख्यान के अंतर्गत डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा ''जीना इसी का नाम है'' विषय पर अत्यंत सारगर्भित व्याख्यान हुआ।

इस अभिनव प्रयोग को सभी युवाओं ने प्रशंसनीय और सार्थक कार्य बताया और इसे जारी रखने का निवेदन किया। यह कार्यक्रम श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई और श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के तत्वावधान में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, ज्ञानोदय द्वारा आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का सफल निर्देशन श्री विराग शास्त्री जबलपुर और संयोजन श्री अमित अरिहंत, पण्डित शुभम शास्त्री ज्ञानोदय द्वारा किया गया।

# जन्मदिन की मंगल शुभकामनायें

**जन्म मरण के अभाव की भावना में ही जन्म दिवस मनाने की सार्थकता है।**

**कविश** मंगल आतमा, इसका हो श्रद्धान।
निज में निज की स्वस्ति हो, बनना तुम भगवान।।
**कविश रोहन वोहरा**, पुणे 13 अक्टूबर

**अनभ** पुण्य उदय जगा, पाया मंगल धर्म।
यही कामना जन्म दिवस पर, पाना शिवपुर शर्म।।
**अनभ बण्डी,** भीलवाड़ा 17 अक्टूबर

**अनायशा** आशा छोड़कर, आतम का कर विश्वास।
जन्म मरण का अंत हो, हो मुक्ति का वास।।
**अनायशा आदीश जैन,** मुम्बई 18 अक्टूबर

**वैदिक** जिनधर्म मिला, करना आतम का काज।
जन्म दिवस पर यही कामना, पाना शिवपुर राज।।
**वैदिक अमित जैन,** लखनऊ 22 अक्टूबर

जग में कलायें अनेक हों, पर सच्चा आतम ज्ञान।
आत्म ज्ञान में हो **माहिरा**, हो मुक्ति विश्राम।।
**माहिरा मोहित जैन,** पुणे - 24 अक्टूबर

धैर्यवान हो **ताश्वी**, हो नारी आदर्श।
सीता मैना सा साहस धरो, पाओ शिवपुर दर्श।।
**ताश्वी शशांक जैन,** भीलवाड़ा 27 अक्टूबर

# भुलाये नहीं भूलती....

**(एक सच्ची मार्मिक घटना)**

मेरी उम्र 14 वर्ष है। बचपन से आज तक मैंने अपने हृदय में मूक पशुओं के लिये प्यार, करुणा व संवेदना को महसूस किया है। समय के साथ मैं गम्भीर होती गई और मूक पशुओं के प्रति मेरी करुणा बढ़ती गई। कुछ दिन पहले घटित एक घटना ने मुझे झकझोर दिया।

अचानक एक दिन मेरे पास एक फोन आया कि दमोहनाका (जबलपुर का एक क्षेत्र) की एक गली में एक गाय गम्भीर अवस्था में है और तड़प रही है। मैं अपने स्वभाव के अनुसार तुरन्त वहाँ पहुँच गई।मुझे कुछ समझ में नहीं आया और मैंने उसके कान में जोर-जोर से णमोकार मंत्र पढ़ना शुरु कर दिया। उसकी तकलीफ देखकर मैं पूरी श्रद्धा के साथ णमोकार मंत्र सुनाती रही और कुछ समय बाद वह गाय एकदम शान्त होने लगी, ऐसा लगा वह अपना सारा कष्ट भूल गई हो और थोड़ी ही देर में उस गाय ने अपनी आयु पूरी कर ली। इसके बाद सरकारी डॉक्टरों को बुलाकर उनकी देखरेख में गाय की बॉडी को छोड़कर घर वापस आ गई परन्तु मेरा मन उस गाय के पास ही रह गया। बार-बार उसका तड़पना मेरी आंखों के सामने आ रहा था। मुझे माँ ने बताया था कि गाय भी संज्ञी पशु है। रात भर सो नहीं पाई, यही विचार चलता रहा कि आखिर क्या कारण हो सकता है जिससे इतनी हष्ट-पुष्ट गाय मर गई।

सुबह होते ही मैंने डॉक्टरों से जानकारी ली तब पता चला कि कचरे में बासे भोजन के साथ किसी ने बच्चे का डायपर भी फेंक दिया और वह भोजन के साथ डायपर भी गाय के खाने में आ गया और वह गले में फंस गया जिससे सांस लेना बन्द हो गया और वह मर गई। वह गाय एक गरीब परिवार की थी जिसका खर्च उस गाय का दूध बेचकर चलता था।

हम इंसान भी कितनी गल्तियाँ करते हैं जिसके कारण मूक पशुओं की जान जा रही है। हमारी एक असावधानी किसी जानवर की दर्दनाक मौत का कारण बन जाती है। अब बतायें हम कितने शिक्षित और संवेदनशील हैं...?

विश्व में एक मात्र भारत देश में हिन्दू समाज में गाय को माता का कहा जाता है। लोग निकलते ही गाय को स्पर्श करके उसे नमन करते हैं। गाय-भैंस का दूध सभी पीते हैं। फिर भी उसके साथ ऐसा अमानवीय व्यवहार क्यों ? मैंने तो संकल्प है मैं पॉलीथिन में खाने का सामान भरकर नही फेकूँगी पर मैं आपसे भी पूछती हूँ कि आप इस पवित्र अभियान आप मेरा साथ देंगे.....।

**आपसे विनम्र निवेदन**

- **पोलिथीन में खाने की सामग्री भरकर न फेकें। सब्जी आदि के छिलके स्वयं की पशुओं के सामने दें या उसे खुला ही फेकें।**
- **डायपर आदि अशुद्ध वस्तुयें कचरा गाड़ी या निर्धारित स्थान पर अच्छी तरह बांधकर फेकें।**
- **प्लास्टिक के अनुपयोगी सामान भोजन के साथ न फेकें।**

**कु. सुविधि जैन**
लालकुंआ, जबलपुर 482002 (म.प्र)

**जिनदेशना समिति द्वारा लघु आयोजनों में होने वाले एक दिवसीय विधान की उपयोगिता की दृष्टि से विभिन्न कवियों के पांच विधानों का लघु पंच विधान संग्रह प्रकाशित किया गया है। इसका उपयोग विभिन्न आयोजनों में भी किया जा सकेगा। प्रस्तुत प्रकाशन प्राप्त करने के लिये आप व्यक्तिगत रुप से आर्डर संख्या एवं पता भेजें। इसका मूल्य पुनः प्रकाशन राशि के रुप में मात्र 20/- (पोस्ट शुल्क अतिरिक्त) है। इस पुस्तक की लागत राशि 52/- है।**

**इस पुस्तक के प्रकाशन में कु.अनन्या सुपुत्री श्री विवेक जैन, इंदौर का विशेष आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है।**

# कर्म प्रधान विश्व करि राखा, जो जस करहिं सो तसफल चाखा ।

हम जाने-अनजाने में ऐसे परिणाम और पाप करते हैं कि उनसे भयंकर कर्म का बन्ध हो जाता है और जब ये कर्म उदय में आते हैं तो पूरा जीवन उसके निवारण में निकल जाता है। देखिये इन चित्रों को

एक बीमारी के कारण इस व्यक्ति का पैर इतना विशाल हो गया कि चलना-फिरना भी मुश्किल हो गया।

ये बालक जन्म से ही ऐसा .....

परिवार के 30 सदस्य और सभी की 24-24 उंगलियां

# बोरीवली मुंबई में आयोजित श्री कुंदकुंद कहान दिगम्बर तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुंबई के स्वर्ण जयंती महोत्सव एवं अधिवेशन की झलकियाँ

चहकती चेतना की ओर से प्रयास जोरदार

जिनदेशना

# अहिंसा अभियान

के अंतर्गत

## पटाखे न फोड़ने वालों को मिलेंगे

## ढेरों आकर्षक पुरस्कार



सैकड़ों आकर्षक एवं उपयोगी पुरस्कार



विश्व में अहिंसा धर्म के प्रबल प्रचारक के रुप में विख्यात भगवान महावीर का मंगलकारी **निर्वाण महोत्सव** आगामी 31 अक्टूबर 2024 को आ रहा है, पर दुःखद तथ्य है कि अहिंसा के सम्राट के निर्वाण महोत्सव के दिन ही अनेक जैन साधर्मी और उनके बच्चे पटाखे फोड़कर अनंत जीवों की हिंसा करते हैं। वीर निर्वाण महोत्सव को अहिंसक रूप से भगवान महावीर की भक्ति के साथ मनाना चाहिये। **लोकप्रिय बाल-युवा पत्रिका चहकती चेतना** गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी पटाखे न फोड़ने वालों के लिये एक आकर्षक योजना प्रस्तुत कर रही है। गत वर्ष इस योजना में भाग लेकर 5500 बच्चों ने फटाखे नहीं फोड़ने का संकल्प निभाया था।

- यह योजना 5 वर्ष से 20 वर्ष तक के बच्चों के लिये होगी।
- योजना में सहभागिता के लिये सर्वप्रथम आपको अपना नाम ऑनलाईन रजिस्टर्ड करना होगा।
- रजिस्ट्रेशन के लिये आप अपना नाम लिखकर 9752756445 पर व्हाट्सएप पर मैसेज कर फार्म लिंक प्राप्त करें।
- पटाखे नहीं फोड़ने वाले सभी बच्चों को संस्था द्वारा ई-प्रमाण-पत्र भेजा जायेगा।
- इस योजना के अंतर्गत आपको 25 अक्टूबर से 15 नवंबर तक पटाखे या आतिशबाजी किसी भी रुप में नहीं जलाना होगी।
- सहभागिता करने वाले प्रतिभागियों को संकल्प पत्र का प्रिंट निकालकर उसे भरकर उसके साथ अपना फोटो ऑनलाइन फार्म में अटेच करना होगा।
- इस योजना में शामिल सभी बच्चों को लकी ड्रॉ में शामिल किया जायेगा और लकी ड्रॉ में नंबर आने पर उन्हें पुरस्कार दिया जायेगा। यह लकी ड्रॉ 15 नवंबर के बाद निश्चित तिथि को ऑनलाईन माध्यम से किया जायेगा। जिसमें आपको उपस्थित रहना आवश्यक रहेगा। कार्यक्रम की सूचना व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से आप तक पहुँचा दी जावेगी।

निर्देशक : विराग शास्त्री, जबलपुर 9300642434 संयोजक : प्रतीक गांधी, इंदौर 9425316602, सह-संयोजक : अमित अरिहंत,भोपाल 9588001360, मोहित शास्त्री जयपुर 9424904821

आयोजक - चहकती चेतना पत्रिका एवं जिनेदशना